School of Humanities

Certificate

I hereby declare that the short synopsis **“पञ्चतन्त्र की कथाओं में निहित शिक्षाओं की प्रबन्धन तन्त्र में उपादेयता: एक अध्ययन”** being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in **Sanskrit and Prakrit Language** under School of Humanities of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2023-24.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Prof. Vinod Kumar Gupta and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the report has been submitted.

ASHISH KUMAR SINGH
En. No.- 2301001

Research Supervisor:-

Prof. Vinod Kumar Gupta
Faculty of Sanskrit

Prof. Satyapal Tiwari
Director of School of Humanities

Prof. P. K. Pandey
Director, R&D Cell

Approved Research Topic

“पञ्चतन्त्र की कथाओं में निहित शिक्षाओं की प्रबन्धन तन्त्र में उपादेयता: एक अध्ययन”

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN SANSKRIT AND PRAKRIT LANGUAGE

to

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
प्रयागराज
॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

by

ASHISH KUMAR SINGH

En. No.- 2301001

Under the Supervision of

Prof. Vinod Kumar Gupta

Faculty of Sanskrit

School of Humanities

U.P. Rajarshi Tandon Open University

Shantipuram, (Sector –F) Phaphamau, Prayagraj – 211021

Ashish Kumar Singh

ABSTRACT :-

दैनिक गतिविधियों में आने वाली कठिन चुनौतियों से निपटने और हमारे सामने आने वाले अवसरों का प्रभावी उपयोग करने के लिए आवश्यक कौशल होना बहुत महत्वपूर्ण है। सैद्धान्तिक कक्षाओं में औपचारिक शिक्षा में इन कौशलों को सिखाना शिक्षकों और पेशेवर प्रशिक्षकों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और कंपनियों के लिए इन पञ्चतन्त्र कहानियों को अपनाने का अवसर है ताकि आवश्यक कौशल और मनोबल को सबसे आसान और प्रभावी तरीके से सिखाया जा सके। युवाओं में जीवन कौशल और प्रबन्धकीय कौशल प्रदान करने के उद्देश्यों के साथ प्रबन्धन शिक्षा में पञ्चतन्त्र कहानियों और इसकी प्रयोज्यता का विश्लेषण और समझने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किए गए क्योंकि ये वर्तमान युग में बहुत आवश्यक हैं। अध्ययन से पता चलता है कि आवश्यक कौशल को आत्मसात करने के लिए अधिकांश पञ्चतन्त्र कहानियों को पाठ्यक्रम में अपनाया जा सकता है। चूंकि ये कहानियाँ स्वयं-व्याख्यात्मक हैं और इससे छात्रों के लिए अपनाई गई विषय-वस्तु को समझना आसान होगा और उनमें इसे विकसित भी किया जा सकेगा। ये कौशल आने वाले दिनों में और साथ ही कॉर्पोरेट जगत् में उनके लिए बहुत उपयोगी होंगे।

Keywords :- ***पञ्चतन्त्र, सबक, कथा- साहित्य, कॉर्पोरेट जगत्, प्रबन्धन तन्त्र***

Ashish Kumar Singh

S.No.	Contents	Page No.
1.	Introduction	5
2.	Literature Review	6
3.	Description Broad Area	8
4.	Objectives of the Study	10
5.	Research Methodology	10
6.	Expected Outcome of the Research	10
References		11-12
Plagiarism Report		

Ashish Kumar Singh

1. Introduction :-

संस्कृत वाङ्मय के विविध विधाओं में एक विधा है- कथा-साहित्य। जिसमें कथाओं के माध्यम से समाज को शिक्षा प्राप्त होती है। पञ्चतन्त्र भी कथा-साहित्य का महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें शिक्षाप्रद अनेक कथाओं का समावेश हुआ है जो एक-दूसरे कथा से सम्बद्ध हैं। पञ्चतन्त्र संसार के कथा साहित्य में अनोखा स्थान रखता है। संस्कृत कथा साहित्य मानव मूल्यों की संरक्षण की शिक्षा प्रदान करता रहा है। कथा एवं कहानियों के प्रति बालकों की स्वाभाविक अभिरुचि देखने को मिलती है। संयुक्त परिवार प्रथा में छोटे-छोटे बच्चे अक्सर अपने घर के बड़ों से कौतुहलतावश अनेक प्रश्न पूछते थे और बड़े लोगों से विविध जीव जन्तुओं की मूल्यपरक कथाएं सुनकर अपने प्रश्नों से उत्पन्न जिज्ञासा को शांत करते थे। इन कथाओं का बालकों के जीवन पर अमिट प्रभाव होता था। प्रायः महापुरुषों ने अपने परिवार के श्रेष्ठ जनों के मुख से सुनी हुए कथाओं के आधार पर जीवन-मूल्यों का निर्माण बाल्यकाल में ही निश्चित कर लिया था। छोटे –छोटे बालको को अधिकांशतः पशु-पक्षियों एवं वीर रस पर आधारित कहानियों को सुनना रूचिकर लगता हैं।

पञ्चतन्त्र के लेखक के रूप में विश्व के सभी संस्करणों में विष्णु शर्मा का नाम अवश्य उपलब्ध होता है। यद्यपि विद्वानों का इस में मतैक्य नहीं है तथापि किसी अन्य नाम के लेखक के अनुपलब्ध होने के कारण इस संदर्भ में किसी प्रकार का संदेह किया जाना अनावश्यक प्रतीत होता है। अब तक के प्राप्त साक्ष्यों के अनुसार पञ्चतन्त्र के लेखक आचार्य विष्णु शर्मा का नाम ही प्रामाणिक है। पञ्चतन्त्र के लेखक विष्णु शर्मा के निवास स्थान, माता-पिता, परिवार एवं आश्रयदाता आदि के विषय में किसी भी प्रकार का विवरण उपलब्ध नहीं होता है।

Ashish Kumar Singh

पञ्चतन्त्र के भिन्न-भिन्न प्रांतों में तथा भिन्न-भिन्न शताब्दियों में अनेक संस्करण हुए। जिनमें सर्वाधिक प्राचीन संस्करण तन्त्राख्यायिका है, जिसका मूल स्थान कश्मीर प्रांत है।

वर्तमान में पञ्चतन्त्र के भिन्न - भिन्न चार संस्करण उपलब्ध हैं :-

(1) पञ्चतन्त्र का पहलवी अनुवाद

(2)गुणाढ्य की बृहत्कथा में अन्तर्निविष्ट

(3)तन्त्राख्यायिका तथा सम्बद्ध जैन कथा संग्रह

(4)दक्षिणी पञ्चतन्त्र।

2. Literature Review :-

प्रस्तावित शोध विषय से सम्बन्धित शोध कार्य को शोधार्थी ने पूर्व में हुए शोध कार्यों को विभिन्न अन्तर्जालीय (ऑनलाइन) तथा ऑफलाइन स्रोतों से जानकारी एकत्र किया। जहाँ निम्नलिखित विषयों पर पूर्ववर्ती शोध कार्यों का विवरण प्राप्त हुआ।

क. पञ्चतन्त्र की कहानियाँ – प्रबन्धन ज्ञान का एक अवतार

शोधकर्ताओं ने **प्रबन्धन** के उन पाठों की खोज के उद्देश्य से शोध किया है जो पञ्चतन्त्र की कहानियों में पाए जा सकते हैं, इस कार्य के लिए द्वितीयक डेटा का उपयोग किया गया और पाया गया कि कहानियाँ कुशल प्रबन्धकीय प्रथाओं के लिए नियम बनाती हैं और उन व्यवहारों पर भी टिप्पणी करती हैं जिनसे नेताओं को बचना चाहिए यदि वे सफलता और लोकप्रियता प्राप्त करना चाहते हैं।

Ashish Kumar Singh

ख. साहित्य के माध्यम से सङ्कट प्रबन्धन सीखना

इस शोध के माध्यम से, शोधकर्ताओं ने पञ्चतन्त्र के माध्यम से प्रभावी सङ्कट प्रबंधन सीखने का प्रयास किया है, उन्होंने सङ्कट प्रबंधन के लिए व्यवहार्य सबक/ शिक्षाएं पायीं हैं, जो हैं-

- ❖ पाठ 1: - केवल बहादुर लोग ही जीवन में सफल होते हैं 'सियार और ढोल' की कहानी से।
- ❖ पाठ 2:-जब आप किसी खतरे को आते हुए देखते हैं, तो तुरंत कार्य करें 'तीन मछलियों' की कहानी से।
- ❖ पाठ 3:- अपना सर्वश्रेष्ठ करो लेकिन इसे भाग्य पर छोड़ दो 'व्यापारी के बेटे' की कहानी से।
- ❖ पाठ 4:- जो असम्भव लगता है, उसे भी अच्छी तरह से जाँचो 'सुनहरी बून्दों की कहानी' से।
- ❖ पाठ 5:- खतरे के पहले संकेत पर, खुद को 'दो मछलियों और एक मेंढक की कहानी' से बचाने के लिए तुरंत कार्य करें।
- ❖ पाठ 6: - 'दो सिर वाले पक्षी' से संघ में शक्ति है।

ग. प्रबन्धन और पञ्चतन्त्र: कॉर्पोरेट दुनिया में ज्ञान का एक द्वार

यह शोध प्रपत्र प्रबन्धन के लिए नवीन रणनीतियों को उचित तौर पर सीखने और समझने के लिए पञ्चतन्त्र की खोज और एकीकरण पर केन्द्रित है। इसका उद्देश्य प्रबन्धकों के व्यवहार सम्बन्धी पहलू में सुधार करना है। एक

Ashish Kumar Singh

बार जब बुनियादी सोच कौशल सेट को ठीक से निर्देशित किया जाएगा तो यह निश्चित रूप से प्रबन्धकों की दक्षता और उत्पादकता को बढ़ाएगा।

उपर्युक्त शोध-कार्यों पर विचार करने के अनन्तर पञ्चतन्त्र में निहित प्रबन्धन ज्ञान पर विभिन्न दृष्टियां प्राप्त होती हैं। परन्तु इन शोधों में सीख या सबक पर पर्याप्त रूप से प्रकाश नहीं डाला गया है। प्रस्तुत शोध इस उपेक्षित पक्ष को उजागर करते हुए एक नवीन दृष्टिकोण प्रदान करेगा।

3. Description Broad Area :-

प्रस्तावित शोधविषय में सम्यक् तथा सारगर्भित प्रतिपादन के लिए मेरे द्वारा विभिन्न विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों, पत्र, पत्रिकाओं, ऑनलाइन तथा ऑफलाइन सामग्रियों की सहायता ली जाएगी तथा शोधप्रबन्ध के सम्यक् प्रतिपादन के लिए सर्वप्रथम शोध की सीमाओं का निर्धारण किया जाएगा, जिससे शोधकार्य को व्यर्थ के भटकाव से बचाया जा सके और शोध को सही दिशा दी जा सके।

प्रस्तावित अध्याय विभाजन

प्रथमाध्याय

- **विष्णु शर्मा का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व**

द्वितीयाध्याय

- **पञ्चतन्त्र की कथाओं का प्रतिपाद्य विषय**

तृतीयाध्याय

- **मित्रभेद की कथाओं में निहित शिक्षाओं की प्रबन्धन तन्त्र में उपादेयता**

Ashish Kumar Singh

चतुर्थाध्याय

- **मित्रसम्प्राप्ति की कथाओं में निहित शिक्षाओं की प्रबन्धन तन्त्र में उपादेयता**

पञ्चमाध्याय

- **काकोलूकीय की कथाओं में निहित शिक्षाओं की प्रबन्धन तन्त्र में उपादेयता**

षष्ठाध्याय

- **लब्धप्रणाश की कथाओं में निहित शिक्षाओं की प्रबन्धन तन्त्र में उपादेयता**

सप्तमाध्याय

- **अपरीक्षितकारक की कथाओं में निहित शिक्षाओं की प्रबन्धन तन्त्र में उपादेयता**

अष्टमाध्याय

- **उपसंहार**

Ashish Kumar Singh

4. Objectives of the Study :-

किसी समस्या का उदय तब होता है जब किसी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र के समक्ष कोई आवश्यकता आती है। इस शोध को करने के पीछे शोधकर्ता के निम्न उद्देश्य हैं-

1. प्रबन्धन तंत्र को समझने के लिए पञ्चतन्त्र का अध्ययन करना।
2. वर्तमान प्रबन्धन शिक्षा की स्थिति एवं अपेक्षाओं का अध्ययन करना।
3. पञ्चतन्त्र की कथाओं का पाठ्यक्रम के रूप में उपयोग करके प्रबन्धन कौशल सीखने के लिए व्यावहारिक तरीके की पहचान करना।

5. Research Methodology :-

प्रस्तुत शोध में विषयवस्तु विश्लेषण पद्धति का प्रयोग करते हुए पञ्चतन्त्र की कथाओं में निहित शिक्षाओं की प्रबन्धन तन्त्र में उपादेयता की खोज की जाएगी।

6. Expected Outcome of the Research :-

पारम्परिक ज्ञान के निरन्तर महत्व को प्रदर्शित करने के लिए, यह अध्ययन पञ्चतन्त्र की कहानियों में निहित शिक्षाओं का विश्लेषण करेगा और उन्हें समकालीन प्रबन्धन अवधारणाओं से जोड़ेगा। इसके अलावा, पूर्व शोध की कमियों के आलोक में, यह अध्ययन प्रबन्धन में पञ्चतन्त्र की कहानियों की उपयोगिता को प्रदर्शित करेगा, जो केवल नैतिक शिक्षा प्रदान करने से कहीं आगे

Abhish Kumar Singh

जाती है। यह शोध समकालीन प्रबन्धन शिक्षा और प्रशिक्षण तथा प्राचीन भारतीय साहित्य के बीच एक वैचारिक कड़ी का काम करेगा। इस अध्ययन से यह प्रदर्शित होने की उम्मीद है कि पञ्चतन्त्र की कहानियाँ टीम समन्वय, नेतृत्व, सङ्कट प्रबन्धन, निर्णय-निर्माण, रणनीति निर्माण और सञ्चार सहित महत्वपूर्ण प्रबन्धकीय क्षमताओं के विकास में सहायक होंगी। यह अध्ययन प्रबन्धन शिक्षा के एक स्वदेशी, सांस्कृतिक रूप से प्रासङ्गिक और वैकल्पिक स्रोत की सम्भावना प्रदान करेगा, जो अनुदेशनात्मक रणनीतियों में नवाचार को बढ़ावा देगा।

References :-

- द्विवेदी,कपिल देव(2016) : संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास: विश्वविद्यालय प्रकाशन
- शास्त्री, श्री गुरु प्रसाद(2019): पञ्चतन्त्रम् -विष्णु शर्मा
- गुप्त, गोकुलदास(पुनर्मुद्रण 2011) : पञ्चतन्त्रम्(सरला हिन्दी टीका सहित):विष्णु शर्मा,
- पाल एवं पाल:विषयवस्तु विश्लेषण,
- विश्वास(2014) : संक्षेप पञ्चतन्त्रम्,भाग 1 एवं भाग 2,

कोश ग्रन्थ

❖ चतुर्वेदी, द्वारकाप्रसाद (स्व.) एवं झा, तारिणीश (सम्पा०). (1971). संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ (संस्करण: 1971). रामनारायणलाल बेनीप्रसाद प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता.

Ashish Kumar Singh

❖ अमरसिंह. (2072 वि. सं.). अमरकोष (हरगोविन्द शास्त्री, व्याख्या एवं सम्पा०). चौखम्भा संस्कृत संस्थान

❖ आप्टे, वामन शिवराम. (पाण्डेय, उमा प्रसाद, सम्पा०). (n.d.). संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश. कमल प्रकाशन.

❖ भट्टाचार्य, तारानाथ. (1962). वाचस्पत्यम्. चौखम्भा संस्कृत सीरीज ऑफिस.

❖ राधाकान्तदेव, राजा. (1967). शब्दकल्पद्रुमः. चौखम्भा संस्कृत सीरीज ऑफिस

अन्तर्जालीय स्रोत

❖ www.sanskritlibrary.org
❖ www.wikipedia.com
❖ www.hindunet.com
❖ www.sanskritvishvam.com
❖ www.archive.org
❖ www.lib.jnu.ac.in
❖ www.ndl.iitkgp.ac.in
❖ https://pib.gov.in
❖ www.india.gov.in
❖ www.wfp.org

Ashish Kumar Singh

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language Hindi

Submission Information

Author Name	Ashish Kumar Singh
Title	Panchantra Ki Kathaon Mein Nihit Shikshaon Ki Prabandhan tantra Mein Upadeyata :Ek Adhyayan
Paper/Submission ID	3701344
Submitted by	profvkgupta@uprtou.ac.in
Submission Date	2025-05-30 15:15:37
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **1%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

Ashish Kumar Singh

DrillBit

DrillBit Similarity Report

1 SIMILARITY %	**1** MATCHED SOURCES	**A** GRADE	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	Paper Submitted to Awadesh Pratap Singh University, Rewa	1	Student Paper

Ashish Kumar Singh